मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

Mentorship 2021

टेस्ट-8

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-21 M1-HL8

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): SONU PARMAR

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): sonuparmardtg@gmail.com

परीक्षा केंद्र एवं दिनांक (Test Centre and Date): Mukherjee Nagar

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा 2021] [Roll No. UPSC (Pre) Exam 2021]:

0	4	2	0	0	5	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 155½ टिप्पणी (Remarks): ———

मूल्यांककर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51 वि

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छे हैं।
विषय-वस्तु की समझ और विश्लेषण-क्षमता अच्छी है।
• पाठ्यक्रम पर पकड़ अच्छी है।
भूमिका व निष्कर्ष प्रभावशाली हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड – क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

सन्दर्भ-प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है। जिसका प्रकाशनकाल 1936 है। इस गद्यावतरण में मालती द्वारा मेहता के विवाह प्रस्ताव को मना करने सम्बन्धी प्रसंग को दिखाया गया है।

व्याख्या – मेहता मालती के व्यक्तित्व-न्तरण होने के बाद उसके प्रेम से अभिभूत

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होकर अपना प्रेम-प्रस्ताव रखते हैं जिसे मालती यह कहकर मना कर देती है कि विवाह के बन्धन में बंधकर हम दोनों स्वार्थवश संकीर्ण जीवन जी पाएंगे। इसके स्थान पर वह मित्रवत रहने और अनपेक्षा का प्रस्ताव रखती है।

विशेष – शिल्प → हिन्दुस्तानी भाषा है जिसमें तत्सभी पन का प्रभाव है, जो सभी शहरी शिक्षित पात्रों में दिखता है।

भाव → मालती के माध्यम से प्रेमचन्द ने अपनी छायावादी नारी दृष्टि को प्रदर्शित किया है।

तुलना → प्रसाद के नारी-चरित्रों के समान छायावादी जैसे- देवसेना, श्रद्धा।

Good 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्तक होते ही जाते हैं।

सन्दर्भ - प्रसंग -

प्रस्तुत गद्यावतरण भारतेंदु युगीन निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट रचित 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' से ~~ली गई है~~ लिया गया है। जिसमें लेखक ने तात्कालीन समाज की स्थिति को दर्शाया है।

व्याख्या -

इन पंक्तियों में रचनाकार ने तात्कालिक समाज में हिन्दू जाति में विभिन्न जातियों और पंथों के आधार पर विखण्डन के वर्णित किया है। जिसे उन्होंने नारी चरित्र के स्खलन से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तुलना करके बताया है।

विशेष

शिल्प → भाषा भारतेंदु युगीन खड़ी बोली आरंभिक अवस्था का बोध कराती है।

→ मुहावरे का प्रयोग - "एक नारि अब... रोचकता प्रदान करता है।

भावपक्ष →

रचनाकार ने तात्कालीन समाज में सामाजिक विसंगतियों पर चोट की है।

→ भारतेंदु युग की नवजागरण चेतना के दर्शन होते हैं।

महत्व स्व बालकृष्ण भट्ट ने विचारपरक निबन्धों के माध्यम से भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Good Ans 6½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ - प्रसंग

प्रस्तुत गद्यांश प्रसाद रचित नाटक 'स्कंदगुप्त' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में मातृगुप्त कविता के महत्व का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या

मातृगुप्त कविता का महत्व बताते हुए कहते हैं कि कविता वर्णमयी चित्र है जिसमें संगीत की अनुभूति होती है। कविता अन्धेरे से उजाले, जड़ से चेतन और सत्य की ओर ले जाती है। अन्तर्जगत व बाह्यजगत का संबंध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(Please do not write anything except the question number in this space.)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space.)

भी कविता ही स्थापित करती है।

विश्लेषण

शिल्प —

प्रसाद युगीन तत्समी भाषा का प्रयोग हुआ है जो कि राजा लक्ष्मण सिंह की परंपरा की है और भारतेन्दु मोहन राकेश के नाटकों में भी दृष्टव्य है।

भाव/कथ्य —

रचनाकार ने काव्य व कवित्व के महत्व को स्थापित करने का प्रयास किया है।

तुलना — शुक्ल जी के निबन्ध 'कविता क्या है' में भी कविता के महत्व को बताया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

सन्दर्भ-प्रसंग — प्रस्तुत गद्य रचना नवलेखन कालीन कथा सँकलन 'एक दुनिया समानान्तर' में से लिया गया है। यह 'दूध और दवा' कहानी का अँश है जिसके रचनाकार मार्कण्डेय है। इन पंक्तियों में साहित्यकार की विडंबना को दर्शाया गया है।

व्याख्या — इस कहानी का रचनाकार आर्थिक तंगी और साहित्य सृजन के बीच संघर्षरत है। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से रचनाकार सामाजिक मान्यताओं और विसंगतियों के आगे स्वयं की विवशता के अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करने का प्रयास करता है।

विशेष →

शिल्प → नवलेखन के दौर की विशेषताएँ जैसे - कथानक का टूटना यहाँ पूरी तरह व्यक्त हुआ है ठीक वैसा ही जैसे 'सामान' कहानी में।
→ भाषा सहज है।

भाव/कथ्य → निरर्थकता बोध और लघुमानववाद को व्यक्त करती कहानी।

तुलना → मोहन राकेश के 'आधे-अधूरे' और 'आषाढ़ का एक दिन' के समान परिस्थिति आधीन लघुमानव।

Good 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग →

प्रस्तुत गद्यावतरण उपन्यास 'मैला आँचल' से लिया गया है जिसके रचनाकार फणीश्वरनाथ रेणु हैं। इन पंक्तियों में डॉ० प्रशान्त मनुष्य की अन्तर्दशा अर्थात् मन और भौतिक शरीर के पृथकत्व को व्यक्त करते हैं।

व्याख्या

डॉ० प्रशान्त एक डॉ० हैं जो शरीर की चीरफाड़ के द्वारा दिल को प्राप्त करने की असमर्थता बताता है। उसके अनुसार दिल कोई भौतिक वस्तु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं है। दिल को एक मंदिर बताता है। जिसमें देवता अर्थात मानवता वास करती है।

विशेष

शिल्प → 'मैला आँचल' की आंचलिक भाषा के विपरीत पात्रानुकूल तत्समी भाषा है।

→ चेतना प्रवाह शैली में प्रशान्त का के अन्तर्मन का विश्लेषण वर्णन है।

कथ्य

प्रशान्त मानवजाति और मनुष्य के अन्दर बसी अच्छाई को देखता है। जो मेरीगंज के निवासियों में भी है।

तुलना जैसे मालती-मेहता 'गोदान' में प्रेमचन्द की दृष्टि का प्रक्षेपण करते हैं वैसे ही डॉ. प्रशान्त रेणु की।

Good 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द सामाजिक यथार्थ के साहित्यकार हैं जो अपने युग की सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक चिन्ताओं को अपनी रचना का कथ्य बनाते हैं। किंतु उनकी निपुण साहित्यिक सृजनक्षमता उनकी कृतियों को सर्वकालिक बना देती है।

प्रेमचन्द की रचनाओं की बुनियादी चिन्ताएँ जैसे - किसानों की समस्या, सामन्तवाद पूँजीवाद की समस्याएँ, बेमेल विवाह, विधवा विवाह, नारी शोषण, दलित शोषण जैसी सामाजिक चिन्ताएँ उनके कथ्य में प्रमुखता से उभर कर आती हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि, पूस की रात। जैसी रचनाओं में किसानों की दुर्दशा का जो मार्मिक चित्रण किया है उस पर निर्मल वर्मा ने कहा है- "गोदान में होरी की दुर्दशा का चित्रण जिस प्रकार किया गया है उससे भारतीय किसान का किसानत्व खतरे में पड़ गया है।"

किसानों की दुर्दशा वर्तमान में भी बनी हुई। कृषकों की आत्महत्याएँ, आन्दोलन प्रेमचन्द की भविष्य दृष्टि को पुष्टि प्रदान करती हैं।

इसी तरह नारी विमर्श को भी उनके साहित्य में स्थान दिया गया है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हालाँकि मालती ('गोदान'), मिसेज खन्ना ('गोदान'), निर्मला ('निर्मला') और मानंदी ('बड़े घर की बेटी') जैसे चरित्रों पर आदर्शवाद का प्रभाव अधिक है लेकिन 'धनिया' ('गोदान'), झुनिया ('गोदान') जैसे चरित्रों में नारी चेतना का स्वर दिखाई देता है जो आज भी प्रासंगिक है।

दलित विमर्श चिंतन प्रेमचन्द के उपन्यासों से ही शुरू होता दिखाई देता है। 'गोदान' (सिलिया), 'सद्गति' (दुखी चमार), 'कफन' जैसी रचनाएँ उनकी दलित विमर्श चेतना के प्रमाण देती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या को अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दलितों की समस्याएँ आज भी समाज में विद्यमान हैं मैला ढोने की प्रथाएँ आज भी सामाजिक कलंक की तरह हमारे विकास के चुनौती दे रही हैं।

प्रेमचन्द ने तात्कालीन दशाओं से समस्याओं के उठाया है और उन्हें साहित्य के माध्यम से सर्वकलिन चिन्तन का विषय बना दिया है।

डॉ० रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'प्रेमचन्द' में लिखा है कि प्रेमचंद युगीन इतिहास नष्ट होने पर उसे प्रेमचंद की रचनाओं के आधार पर ज्यादा सटीक से लिखा जा सकता है, जो प्रेमचन्द की सामाजिक चिन्तन का प्रमाण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल ने मनोविकार परक निबन्धों की रचना की है। उनके निबन्धों के विषय 'श्रद्धा-भक्ति', 'लोभ', 'क्रोध' और 'उत्साह' जैसे मनोभाव हैं। जिन्हें 'चिन्तामणि' में संकलित किया गया है।

शुक्ल जी की निबन्ध-शैली विचारपरक और विश्लेषणात्मक है। शुक्ल जी की निबन्ध शैली की प्रमुख विशिष्टताएं

- वैज्ञानिक पद्धति उनके निबन्धों की प्रमुखता है। वैज्ञानिकता का अर्थ है उनकी रचनाओं में सटीकता होती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, चिकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

परिभाषा है, शब्द इतने नपे तुले की उनके कांट छांट नहीं की जा सकती। जैसे -

"श्रद्धा और प्रेम का योग भक्ति है।"

- शुक्ल जी तार्किकता के साथ साहित्य रचना करते हैं अर्थात उनमें प्रमुख तथ्यों का आधार शामिल होता है।
- ललित निबन्धों से विपरीत वस्तुनिष्ठ लेखन शैली अपनाते हैं। यही कारण है कि उनकी मनोभावों की परिभाषाओं के पश्चिम से ली गई बताया जाता है।
- शुक्ल जी प्रायः निगमनात्मक शैली में लिखते हैं। अर्थात उसमें पहले

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

एक सूत्रवाक्य देते हैं। फिर उसकी व्याख्या को उदाहरणों से पुष्ट करते चलते हैं। लेकिन श्रद्धा भक्ति में उन्होंने आगमनात्मक शैली का प्रयोग भी किया है। श्रद्धा और भक्ति से पहले वे श्रद्धा व प्रेम को परिभाषित कर उनमें अन्तर बताते हैं।

- शुक्ल जी के निबन्धों में शृंखला-बद्धता होती है अर्थात प्रत्येक वाक्य अपने पिछले वाक्य का अगला चरण और अगले वाक्य का आधार होता है।

शुक्ल जी ने विचारपरक निबन्धों पर उतनी ~~जितनी~~ सूक्ष्मता से लिखा है कि इन विषयों पर लिखने को अब कुछ शेष ही नहीं रह गया।

Good A

9½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यशपाल समाजवादी विचारधारा के साहित्यकार हैं। 'दादा कामरेड' 'पार्टी कामरेड' जैसे उपन्यासों में उनकी यह विचारदृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है। 'दिव्या' में भी उनका मानववादी दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है।

'दिव्या' में ऐतिहासिक वातावरण होने से यशपाल के लिए विचारधारा का प्रक्षेपण संभव नहीं था फिर भी अनेक प्रसंगों में उनका दृष्टिकोण दिखाई देता है जैसे -

- पृथुसेन, रुद्रधीर के बीच वर्गभेद को दर्शाना। पृथुसेन द्वारा जन्म के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपराध होने पर रोष उत्पन्न करना

- दिव्या का अपने जीवन के प्रत्येक चरण में शोषण होना। नारी चेतना को दर्शाता है,
- दास दासियों की दुर्दशा का वर्णन -

"अभ्यस्त होने के कारण वे दासियाँ सन्तान वियोग का दुख सहज ही झेल जाती हैं।"

- बौद्ध दर्शन, ब्रह्मवाद पर मारिश के माध्यम से कटाक्ष -

"जिस ब्रह्म को केवल ब्रह्मवादी मानता है उसे सत्य मानना कहां तक उचित है।"

उपरोक्त उदाहरणों से यशपाल की मार्क्सवादी दृष्टि झलकती है लेकिन यशपाल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसमें भी लोचशीलता दिखाते हैं। पृथुसेन का सत्ता प्राप्ति के बाद दास दासियों से व्यवहार उसकी ~~विस्था चेतना~~ वर्गचेतना के अभाव को दर्शाता है -

"शरीर पर एक दुकूल होने से उसे शीत - - — दासी स्वामी के आमोद के लिए निर्वस्त्र थी।"

इसी तरह धर्मस्थ देवशर्मा की मृत्यु छाया की मृत्यु के पश्चाताप में होना वर्गीय चेतन का अतिक्रमण है,

यशपाल मार्क्सवाद का अनुसरण तो करते हैं लेकिन उसका स्थूल प्रक्षेपण नहीं करते। इसी विशेषता ने दिव्या को सफल उपन्यास बनाया है।

Good A 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप है, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

सन्दर्भ-प्रसंग → प्रस्तुत गद्यावतरण नवजागरण कालीन लेखक-नाट्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र कृत नाटक 'भारत दुर्दशा' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में अंधकार द्वारा अपना परिचय दिया जा रहा है।

व्याख्या इन पंक्तियों में अंधकार अपनी उत्पत्ति तमोगुण से बताता है। चोर, मुर्खों, खलनायकों के मन मस्तिष्क में अपना निवास बताता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने दो स्वरूप बताता है एक ज्ञान और दूसरा अंधकार।

विशेष

शिल्प

- भाषा में भारतेंदुकालीन आरंभिक खड़ी बोली के दर्शन होते हैं।
- भाषायी द्वैत होते हुए भी गद्य में खड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है।
- 'आध्यात्मिक', 'अधिभौतिक' जैसी तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

कथ्य → अंधकार अज्ञान के माध्यम से जनता को जाग्रत होने व ज्ञान प्राप्त करने का संदेश दिया गया है।

प्रासंगिकता → नवजागरण चेतना का प्रमुख प्रयास रचना में दृष्टव्य है।

6½/10 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ – प्रसंग

प्रस्तुत गद्यावतरण नवलेखन दौर में प्रकाशित एक 'दुनिया समानान्तर' कहानी संकलन की 'विजेता' कहानी से लिया गया है। इसमें अशोक व कामिनी द्वारा अनचाहे गर्भ को नष्ट करने के प्रयासों के बाद उसके बच जाने पर ~~अशोक की~~ कामिनी द्वारा उसकी विजय मनोदशा को प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या

इन पंक्तियों में कामिनी अशोक के असफ प्रयासों के निरर्थक जाने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number is this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और बच जाने के बारे में कहती है कि उसने यह प्रमाणित कर दिया है कि वह है।

विशेष

शिल्प → नवलेखन दौर की विशेषताएँ जैसे- अत्यन्त विरल कथानक, घटनाओं के स्थान पर विश्लेषण।
→ भाषा सहज है।

कथ्य → इसमें नवलेखन की अन्य समस्याओं के स्थान पर मनचाहे गर्भ की स्थिति को व्यक्त किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग

प्रस्तुत गद्यावतरण ~~छायावादी~~ यशपाल रचनाकार ~~प्रसाद~~ की रचना 'दिव्या' ~~'स्कंदगुप्त'~~ से अवतरित है। इन पंक्तियों में महाश्रेष्ठि प्रेस्थ अपने पुत्र को दिव्या के प्रेम, मोह, आसक्ति पर समझाने का प्रयास करता है।

व्याख्या

प्रेस्थ एथुसेन को समझाता है कि दिव्या की मृत्यु हो जाने से उसे प्राण नहीं त्यागना चाहिए। स्त्री केवल भोग्य है उसके लिए आत्मबलिदान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बुद्धि के श्रमित होने का प्रमाण है।

विशेष

शिल्प → भाषा तत्सम प्रधान भाषा है ~~जो लक्ष्मण सिंह की परम्परा की भाषा है।~~ जो ऐतिहासिक वातावरण के अनुकूल है।

→ उद्धरण शैली भी प्रयुक्त की गई है - चाणक्य का कथन - "आत्मनं सततं रक्षेत.....

काव्य → प्रेम्य के माध्यम से नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण को व्यक्त किया गया है।

→ नारी को मनुष्य के स्थान पर वस्तु के रूप में व्यक्त किया है।

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी महिलाओं की सामाजिक दुर्दशा इस दृष्टिकोण को प्रमाणित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ-प्रसंग –

प्रस्तुत गद्यावतरण छायावादी रचनाकार प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से अवतरित है। जिसका प्रकाशन 1928 में हुआ था। इन पंक्तियों में ~~पर्णदत्त स्कंदगुप्त को~~ देवसेना स्कन्दगुप्त से समाजसेवा के लिए प्रेम त्याग करने का प्रयास करती है।

व्याख्या –

देवसेना सभी सुखों को क्षणिक बताती है। सुखों की इच्छा करना भी दुख का कारण है। देवसेना कष्ट को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजवंत मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हृदय की कसौटी और तपस्या को अग्नि समान बताते हुए जनसेवा के लिए निजस्वार्थ त्याग की प्रेरणा स्कंदगुप्त देती है।

विशेष

शिल्प → तत्समीभाषा से ऐतिहासिक वातावरण को जीवन्तता प्रदान की गई है।

→ भाषा प्रतीकात्मक है।

कथ्य →

जनसेवा ही जीवन का आधार और प्लेटोनिक प्रेम की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में हुई है।

V. Good

तुलना → प्रेमचन्द की मालती, सोफिया जैसे चरित्रों के समान छायावादी नारी दृष्टि का प्रमाण देवसेना का चरित्र है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ – प्रसंग

प्रस्तुत गद्य रचना समाजवादी रचनाकार यशपाल रचित उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत की गई है। इन पंक्तियों में दिव्या को स्थविर चिवुक के विचारों का स्मरण करते दिखाया गया है।

व्याख्या

इन पंक्तियों में दिव्या ~~द्वा~~ स्थविर चिवुक के वचनों को स्मरण करती है। जिनके अनुसार सुख और दुख अन्योन्याश्रय है अर्थात एक सुख दूसरे सुख या इच्छा को जन्म देता है इसी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के कारण दुख उत्पन्न होता है। इच्छा के स्थान पर इच्छाओं का त्याग ही दुख का निवारक उपाय है।

विशेष

शिल्प → तत्समीपन लिए भाषा ऐतिहासिक वातावरण उत्पन्न करने में सफल रही।

→ सूत्र-भाषा का प्रयोग जैसे- 'सुख दुख अन्योन्याश्रय....

कथ्य/भाव → इन पंक्तियों में जीवन की निरर्थकता और तृष्णा बाल के दिव्या की आशाहीन दुर्दशा द्वारा दिखाया गया है।

यशपाल ने दिव्या के गतिशील व व्यक्तित्वान्वित चरित्र द्वारा अपनी नारी दृष्टि को व्यक्त किया है।

कृपया इस स्थान से कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' रचकर रेणु ने न केवल आँचलिक उपन्यासों के लिए प्रतिमान गढ़े हैं बल्कि इसकी भाषा में अपनी रचनाशीलता को समाविष्ट कर आँचलिक उपन्यासों की भाषा के मानदंड भी स्थापित किए हैं।

'मैला आँचल' को आँचलिक उपन्यास बनाने वाले प्रमुख कारकों में इसकी भाषा भी है। 'मैला आँचल' की भाषा-शैली आँचलिकता के तत्वों को अपने में समेटे है। देशज शब्दों का प्रयोग प्रभावी रूप से हुआ है तो अंग्रेजी के लोकप्रचलित विदेशज शब्द भी विद्यमान हैं। जैसे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बैंसचरमन (वाइसचेयरमैन), हरमुनिया (हारमोनियम), भोलेटियर (वॉलन्टियर) आदि। देशज शब्द- घमाघम, ढनकैबा, ढनमन जैसी शब्द पूरी तरह लोकतत्व को प्रस्तुत करते हैं।

तत्सम शब्द पढ़े लिखे चरित्रों की भाषा में मिलते हैं जैसे डॉ० प्रशान्त 'वेदान्त', 'भौतिकवाद' आदि। तद्भव व तद्भव- देशज शब्द मैला आँचल में प्रभावी मात्रा में उपलब्ध है जैसे- 'ज्योतिख', 'तंत्रिमा' आदि।

भाषा-~~सै~~ बोली की अन्य विशेषताओं में मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग बड़ी मात्रा में है जैसे ज्योतिख काका कहते हैं- "जर जोरु जोर की नहीं तो किसी और की'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्वन्यात्मकता की उपस्थिति पल पल पर लोकसंस्कृति से जोड़ती है। जैसे-

'धिड़ धिड़ धिन्ना धिड़ धिड़ धिन्ना'

'डिम डिमिक डिमिक'

लोकगीतों की उपस्थिति लोकतत्व व आँचलिकता को प्रभावी रूप से व्यक्त करती है। 'सारंगा - सदाबृज' की कथा 'जटजाटिन' का खेल, बिदेसिया के गीत पाठक को आँचल की सैर कराते हैं जैसे- 'याद आमतोरि आवे ...'

लोकतत्व और आँचलिकता के साथ 'मैला आँचल' में डॉ. प्रशान्त जैसे चरित्रों के माध्यम से प्रतीकात्मक तत्वों को भी प्रस्तुत किया गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे - "मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ।"

"डॉ

व्यंग्यात्मकता की उपस्थिति आर्थिक सामाजिकता की विद्रूपताओं को उभारने के प्रसंगों में दिखाई देती है।

"डॉ० की रिसर्च कम्प्लीट हुई। उसने इस रोग की जड़ को पकड़ लिया है। "गरीबी और जहालत ये दो कीटाणु है इस रोग की जड़।"

रेणु ने जितनी समग्रता से अँचल के वर्णन को चित्रित किया उतनी ही समावेशिता से भाषा-बोली को भी सृजनशक्ति से पूर्ण बनाया है। जिसने 'मैला आँचल' की सफलता में प्रमुख भूमिका निभाई है।

3½
12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'देवसेना' हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? सहमति या असहमति के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'देवसेना' छायावादी नारी दृष्टि का प्रतिमान है। प्रसाद ने 'स्कंदगुप्त' नाटक में देवसेना के चरित्र को जो पूर्णता प्रदान की है उसने इस चरित्र को अविस्मरणीय बना दिया है।

देवसेना की चरित्र रचना में प्रमुख विशेषता उसका आदर्शवादी स्वरूप है जो देशप्रेम और जनसेवा के लिए अपने प्रेम का त्याग करने को भी तैयार रहती है -

"मालव का महत्व तो सदा रहेगा x. x. x
आपके मार्ग में बाधा बनकर देवसेना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जीवित नहीं रह सकेगी।'

देवसेना का यह चरित्र 'गोदान' की मालती और सोफिया (रंगभूमि) की तरह प्लेटोनिक प्रेमदृष्टि के प्रस्तुत करता है।

देवसेना के एक राजकुमारी होने तथा त्याग के उच्च आदर्शों ने उसे एक प्रमुखता प्रदान की है। लेकिन आधुनिक ~~स्वनाम~~ समीक्षक देवसेना के चरित्र को एक कमजोर चरित्र माना गया है जो रचनाकार की नारी दृष्टि के प्रख्यापन का साधन मात्र है।

~~वास्तव में~~ देवसेना के आदर्शवादी विचारों से विचलित न होने, ~~के कारण~~ उसकी एकाग्रचित्तता के कारण उपर्युक्त आक्षेप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लगाए गए हैं। किंतु रचनाकार का उद्देश्य इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रसाद नवजागरण चेतना, राष्ट्रप्रेम को दर्शाना चाहते थे। देश के लिए मरमिटने के भाव देवसेना जैसे चरित्रों के माध्यम से दर्शाने के उद्देश्य से उसके चरित्र को आदर्शवादी बनाया गया है।

तात्कालिक महत्व के देवसेना का चरित्र चाहे दिव्या की तरह प्रगतिशील नहीं है लेकिन तात्कालिक सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ तो है ही जो इसे अविस्मरणीय बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास किस रूप में उपस्थित है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' उपन्यास की रचना में ऐतिहासिकता सम्बन्धी दृष्टिकोण इसमें इतिहास की उपस्थिति का निर्धारक है। अर्थात् यशपाल की इतिहास के प्रति दृष्टिकोण या इतिहास दृष्टि के अनुसार ही रचना में इतिहास उपस्थित है।

रचना में तीन ऐतिहासिक पात्रों- पुष्यमित्र, मिलिंद, पतंजलि और तीन ऐतिहासिक स्थलों - सागल, मथुरा, मगध का उल्लेख किया गया है। ऐतिहासिक पात्र केवल संकेतों या एकाध प्रसंग में ही आया है जैसे-

"आशा का आधार मगध सेनापति पुष्यमित्र ह शुंग ही बचे है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रुद्रधीर को मगध भेजने के प्रसंग में पतंजलि का नाम आया है। सागल, मथुरा तात्कालीन व्यापार व्यवसाय के केंद्र के रूप में वर्णित हैं।

दिव्या में यशपाल ने इतिहास के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाया है उसी का प्रभाव है कि रचना में इतिहास का वातावरण मात्र है तथ्य नहीं। यशपाल के शब्दों में –

" रचनाकार ने कला के अनुराग से रचना के चित्र में इतिहास के वातावरण से × × × तात्कालीन इतिहास के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। जो हैं उन पर रचनाकार का अधिकार पर्याप्त नहीं।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अर्थात् दिव्या में इतिहास का केवल वातावरण लिया गया है। यशपाल स्वयं कहते हैं -

"दिव्या कल्पना है इतिहास नहीं।"

प्रेमचन्द भी इतिहास व साहित्य के सम्बन्ध इसी विचारदृष्टि को व्यक्त करते हैं - "साहित्य इतिहास नहीं है। इतिहास में तथ्य खोजे सही होते हैं बाकि सब झूठ और साहित्य में तथ्य झूठ होते हैं बाकि सब सही।"

V. Good

समग्रतः दिव्या में इतिहास का उतना ही प्रयोग किया गया है जितना ऐतिहासिक वातावरण के लिए आवश्यक होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाजवादी रचनाकार यशपाल ने अपनी मानववादी दृष्टि को 'दिव्या' उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह एक ऐतिहासिक वातावरण का उपन्यास है जिसमें 'दिव्या' के चरित्र के माध्यम से नारी शोषण के ऐतिहासिक चरित्र को उभारा गया है।

दिव्या आरंभ में एक सुकुमार तरुणी रहती है जो जाति-वर्ग से परे पृथुसेन से प्रेम करती है। किंतु पृथुसेन से मिले छल और विपरीत परिस्थितियों में उसके चरित्र का विकास होता है।

पृथुसेन द्वारा न अपनाने पर उसे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपनी निरीहता पर पीड़ा होती है और घर छोड़कर चली जाती है, मातल हक द्वारा उसके भोग के प्रयास पर उसे नारी के भोग्यवस्तु होने का विचार आता है -

"कठोर रुद्रधीर, कोमल प्रद्युसेन, मातालहक... जो भोग्या बनने के लिए जन्मी है सभी उसका भोग करेंगे।"

इसके बाद मातुल द्वारा उसे दास बनाकर बेच देना, पुत्र शाकुल के लिए दूध चुराना जैसी दशाएं उसकी परिस्थिति गत विवशता से विकसित चरित्र को दर्शाता है। लेकिन पुत्र की मृत्यु के बाद वह वेश्या बनने का निर्णय लेती है क्योंकि बौद्ध भिक्षुक वेश्या के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वतंत्र नारी मानता है, किंतु मारिश के समझाने पर उसकी दृष्टि कुछ बदलती है। दिव्या के चरित्र में अन्तिम परिवर्तन मल्लिका द्वारा उसे राजनर्तकी बनाए जाने के खण्ड में होता है। रुद्रधीर द्वारा रोमके और कुलमहादेवी का हर्बा होने के प्रस्ताव पर दिव्या कहती है -

"कुलवधू, कुलमहादेवी का आसन नारी का सम्मान नहीं है। वह सम्मान तो उसका भोग करने वाले पुरुष का है। वह अपने स्वत्व का त्याग ऐसे आसन / पद के लिए नहीं करेगी।"

उपरोक्त पंक्तियों में दिव्या का व्यक्तित्वान्तरण व्यक्त होता है। और वह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पुसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, सुंदरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मृणाल (त्यागपत्र), सुनीता (सुनीता) जैसे चरित्रों से कहीं आगे निकल जाती है। वह मारिश का साथ चुनती है, जो उसकी मौलिकवादी यथार्थवादी दृष्टि का परिचायक है।

दिव्या का चरित्र गतिशील चरित्र है जो परिस्थितियों से निर्मित होता है। किंतु अन्त में वह अपने भाग्य को स्वयं बदलती है और स्वतंत्रता का चुनाव करती है। यशपाल भी तो कहते हैं कि -

"मनुष्य केवल अपने बनाए विधान के सम्मुख ही विवश है और वह स्वयं ही उसे बदल भी देता है।"

दिव्या का चरित्र उपर्युक्त पंक्तियों के चरितार्थ करने वाला एक सशक्त चरित्र है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द सामाजिक यथार्थ के रचनाकार हैं। वे सामाजिक समस्याओं को अपने कथ्य का आधार बनाते हैं। उनकी कहानियाँ तो जैसे एक एक सामाजिक समस्या का विमर्श है।

अलग्योझा कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने तीन कथाओं को प्रस्तुत किया है -
1. भोला - पन्ना की
2. रग्घू - मुलिया की
3. केदार - मुलिया की

भोला महतो की पहली पत्नी की मृत्यु पर उनके दूसरे विवाह के बाद रग्घू के साथ विमाता के दुर्व्यवहार से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द मातृहीन शिशु की मार्मिक दशा बताते हैं। यही दृष्टि 'दूध का कर्ज' कहानी में भी व्यक्त हुई है।

भोला मेहतो की मृत्यु के बाद पन्ना के वैधव्य की समस्या और रग्घू द्वारा एवं घर संभालना लेकिन पत्नी मूलिया के आ जाने पर पारिवारिक विघटन को भी व्यक्त किया गया है।

रग्घू की मृत्यु होने पर केहर द्वारा परिवार की जिम्मेदारी उठाना और मूलिया से विवाह के साथ कहानी का अन्त होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस कथा में रचनाकार ने वैधव्य, संयुक्त परिवार की समस्याओं के साथ नारी चरित्र पर भी दृष्टिपात किया है -

"पन्ना रूपवती स्त्री थी। रूप और गर्व में चोली दामन का साथ है।"

समग्रतः समानांतर कथाओं के साथ मुंशीजी ने 'अनमेल विवाह' की समस्या को अपने पूर्णरूप में चित्रित किया है। लेकिन साथ ही हृदयपरिवर्तन द्वारा समस्याओं का हल भी बताया है।

V. Good 9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' मन्नू भण्डारी रचित एक राजनैतिक चेतना का उपन्यास है। जिसमें राजनीतिक विद्रूपताओं और सामाजिक बोटेलताओं को प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया है।

'महाभोज' का उद्देश्य लेखिका के दृष्टिकोण से स्पष्ट होता है जो अन्तर्मन में बने रहने को बा जो अपने समाज की विरोधाभासी दशाओं से विमुख होकर स्वयं केंद्रित विभिन्न वर्गों की संवेदनहीनता पर कटाक्ष करता है।

"जब अपने आस-पास आग लगी हो तो अन्तर्गत में बने रहना अपने में हास्यास्पद नहीं लगता।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दत्ता बाबू, महेश जैसे बुद्धिजीवियों के ~~यह~~ तटस्थ व स्वार्थी व्यवहार हो या दा साहब, सुकुल बाबू जैसे राजनीतिज्ञ या फिर राव चौधरी जैसे मंत्री सभी की स्खलित मानसिकता को विस्तृत रूप से चित्रित किया गया है।

लेखिका ने समस्या को लेकर उसके सभी पक्षों का अर्थात ~~समस्या~~ कारण से लेकर समाधान तक ~~प्रभावी~~ समग्र रूप से वर्णन किया है जो इसे एक सफल उपन्यास बनाता है।

कथानक रैखिक है लेकिन अत्यधिक कसी हुआ और नाटकीयता के धारण करता है। ~~हम~~ दा साहब - सुकुल बाबू,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिस्रू- जैसे चरित्र द्वन्द्व को व्यक्त करते हैं।

भाषा अपने कथ्य के पूरी संवेदना के कहने में समर्थ सिद्ध हुई है। जिसमें सहजता से सभी शब्दों को स्वीकारा गया है जैसे- 'ओह इट्स हॉरिबल' (अंग्रेजी शब्द)

महाभोज भाषा-शैली, कथ्य-कथानक समस्या की गंभीरता सभी पैमानों पर अपनी उपन्यासिक उत्कृष्टता को सिद्ध करता है।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation